मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की मुखपत्रिका

मासिक

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

अगस्त 2025 ज़हूर 1404 हि.श.	प्रबंधक अताउल मुजीब लोन	संस्करण–23 अंक -08

सम्पादक : सय्यद रसूल नियाज़ | **एज़ाज़ी सम्पादक :** एच.शम्सुद्दीन

स.सम्पादक(हिन्दी) : वसीम अहमद अज़ीम

संपादन मंडल
सय्यद कलीम अहमद अजबशेर
मोहम्मद इब्राहीम सरवर

मैनेजर
अज़ीज़ अहमद नासिर
9682536974

प्रेस
फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस
क़ादियान
वार्षिक मूल्य :₹ 250
विदेश: $ 50

प्रकाशन स्थान
ऐवाने अन्सार, भारत
क़ादियान 143516
जिला : गुरदासपुर, पंजाब
फोन : 7837985190

Email:
ansarullah@qadian.in

WEB LINK
https://www.ansarullahbharat.in/Publications/

विषय सूचि	पृष्ठ
सम्पादकीय	2
दर्सुल क़ुरआन	3
दर्सुल हदीस	5
हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	7
हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमूदात	9

संपादकीय

"है तुम से प्यार हमें, ऐतबार कर देखो"

देश से प्रेम हर मनुष्य की प्रकृति में है। इंसान का दिल अपनी मिट्टी, अपनी ज़मीन, अपने गली-मोहल्ले, संस्कृति और अपने लोगों से खुद-ब-खुद जुड़ा रहता है। यही मोहब्बत उसे अपनी पहचान और अपनी जड़ों से जोड़ती है। अगर ये मोहब्बत सिर्फ़ जज़्बाती नारेबाज़ी या दिखावे तक ही सीमित रह जाए, तो इसका असर कुछ वक़्त बाद ख़त्म हो जाता है। लेकिन अगर यही मोहब्बत सच्चाई, ईमानदारी और अल्लाह की खुशी के लिए हो, तो यही इंसान को बड़ा बना देती है। जमात अहमदिया इस्लाम के इसी बुनियादी उसूल को बार-बार याद दिलाती है कि देश से प्रेम सिर्फ़ एक राष्ट्रीय कर्तव्य नहीं, बल्कि ईमान का हिस्सा है। हज़रत मसीह मौऊद व महदी मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने अपने बहुत से लेखों तथा खुत्बों में समझाया है कि जिस हुकूमत के साए में अमन, सुरक्षा और आज़ादी मिलती है, उसके ख़िलाफ़ बगावत करना बड़ा गुनाह है। आपने फ़रमाया कि अपनी सरकार से वफ़ादारी और क़ानून की पाबंदी हर मुसलमान के दीन का हिस्सा है। ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया भी लगातार यही पैग़ाम देती रही है कि अहमदी मुसलमान जहाँ भी रहें, वहाँ के क़ानून का सम्मान करें, वहां के लोगों से प्यार करें और उस मुल्क की भलाई में बढ़-चढ़कर हिस्सा लें। दुनिया के हर कोने में अहमदी मुसलमान अपने अच्छे अख़लाक, सच्चाई और खिदमत से पहचाने जाते हैं। वो क़ानून का पालन करते हैं, देश की तरक़्क़ी में योगदान देते हैं, ज़रूरतमंदों की मदद करते हैं और जब भी कोई आपदा आती है, तो सबसे पहले मदद के लिए आगे बढ़ते हैं। यही वजह है कि आज अगर इंसानियत को बेहतर दुनिया चाहिए, तो उसे वही मोहब्बत अपनानी होगी जो इस्लाम ने सिखाई और जमात अहमदिया निभा रही है। आइए, अपने दिलों को खोलें। अपने देश और इसके लोगों से मोहब्बत करें, भरोसा करें और भरोसा दें, क्योंकि मोहब्बत से ही अमन और तरक़्क़ी की राह निकलती है। "है तुम से प्यार हमें-ऐतबार कर देखो!"(कलाम-ए-ताहिर)

(एच. शमसुद्दीन)

حُبُّ الوَطن

हज़रत अमीरुल मोमिनीन, ख़लीफ़तुल मसीह अल-खामिस अय्यदहुल्ला-हु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

आज हमें 'देश से प्रेम ईमान का हिस्सा है' का सही मतलब सबसे अच्छी तरह समझ आता है। आज अहमदी ही है जो जानता है कि वतन से मोहब्बत क्या होती है। जिस-जिस मुल्क में कोई अहमदी रहता है, वह अपने वतन से, अपने देश से सच्ची मोहब्बत की ज़िंदा मिसाल है।

ख़ुत्बा जुमा 14 अक्टूबर 2005

दर्सुल क़ुरआन

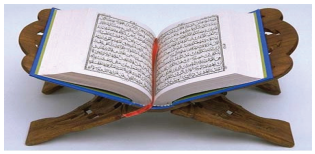

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलखामिस

अंबिया ही वास्तविक आज़ादी के ध्वजवाहक हैं!

हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ही वो हस्ती हैं जिन्होंने इंसानों को बाह्य ग़ुलामी से भी आज़ादी दिलाई। बल्कि आज भी अगर कोई आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से सच्चे दिल से जुड़ जाए, तो आप की जात उसे असली आज़ादी (अर्थात मोक्ष) दिलाने का बड़ा माध्यम बनती है।

अगर हम आज़ादी की हक़ीक़त को गहराई से देखें तो असली आज़ादी हमेशा पैग़म्बरों के ज़रिए ही मिलती है। और इन सब में सबसे बड़ा आज़ादी का सूरज हमारे सामने हज़रत मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का स्वरूप है जिनकी रौशनी दूर-दूर तक फैली हुई है और हर तरह की आज़ादी को अपनी किरनों में समेटे हुए है। आपने इंसानों को सिर्फ़ ज़ाहिरी ग़ुलामी से ही नहीं छुड़ाया, बल्कि वो तरह-तरह की बेड़ियाँ और बोझ जो इंसान ने अपनी गर्दन में डाल रखे थे, उनसे भी निजात दिलाई। आज भी अगर कोई सच्चे दिल से आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) से जुड़ जाए, तो आप की ज़ात असली आज़ादी पाने का बहुत बड़ा ज़रिया है।

इस में कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला की गवाही और उसके ऐलान के बाद किसी भी साफ़दिल इंसान के दिल में ये शक पैदा नहीं हो सकता कि सिर्फ़ मुहर-ए-मोहम्मदी ही है जो तमाम कमालात (परिपूर्णता) पर अपनी मुहर लगाती है और इन कमालात की इंतिहा आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की ज़ात में ही पूरी होती है। दुनिया ने देखा कि ये कमालात आप के ज़रिए कितनी शान से पूरे हुए और होते जा रहे हैं। जो लोग सच्चे दिल से आप से जुड़े हैं, वो अब तक इस का नज़ारा देख रहे हैं। और इस पर आपका सुंदर उस्वा-ए-हसना (बेहतरीन आदर्श) इस पाक तालीम की शोभा को और बढ़ा देता है।

अल्लाह तआला कुरान करीम में एक जगह फ़रमाता है:

"फ़क्कु रक़ाबह" (सूरह अल-बलद: 14) यानी गर्दन छुड़ाना, या यूँ कहें कि ग़ुलाम को आज़ाद करना, या आज़ादी दिलाने में मदद करना।

(ख़ुत्बा जुमा 25 नवम्बर 2011)

★ ★ ★

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

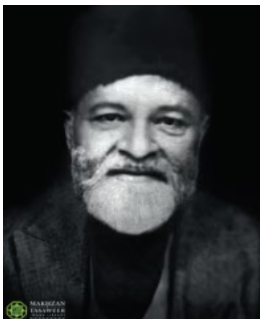

हज़रत मीर मोहम्मद इस्माईल साहिब

حُبُّ الْوَطَنِ مِنَ الْإِيمَانِ

दर्सुल हदीस

हज़रत रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया **"अपने वतन से मोहब्बत करना ईमान का अंश है।"**

[मौज़ूआत-ए-कबीर पृष्ठ 40]

ख़ुदा की क़ुदरत है अपने वतन की हवा-पानी चाहे जैसे भी हों, कितनी ही मुश्किलें क्यों न हों, फिर भी जब कोई कुछ दिन के लिए बाहर जाता है तो दिल उदास हो जाता है। नदी के किनारे रहने वाले लोगों के मकान हर साल बाढ़ में गिर जाते हैं, लेकिन वो जानते हुए भी कि अगली बार फिर बाढ़ आएगी वहीं फिर से घर बना लेते हैं। यही वतन से मोहब्बत है।

हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल कहा करते थे कि एक बार मेरी अम्मी ने मुझसे कहा "नूरुद्दीन! चलो तुम्हें तुम्हारे नाना जान का बाग दिखाऊँ।" मेरी उम्र बहुत छोटी थी। यह सुनकर मैं बहुत खुश हुआ और ख़ुशी-ख़ुशी उनके साथ चल पड़ा। रास्ते में दूर तक इस ख़ुशी में दौड़ता रहा कि नाना जान का बड़ा बाग देखेंगे। बहुत दूर जाकर रास्ते में कुछ बेर के पेड़ आए। अम्मी वहीं बैठ गईं। मैंने सोचा कि गर्मी की वजह से थोड़ी देर आराम कर रही हैं, फिर उठकर बाग चलेंगे। काफी देर बैठने के बाद मैंने कहा "अम्मी! चलिए, नाना जान का बाग देखना है।" तो उन्होंने हंसकर कहा "बेटा! यही तो तुम्हारे नाना जान का बाग है क्या अच्छा बाग है!" जबकि वहाँ बस कुछ बेर के पेड़ ही थे। फिर बताया करते थे कि असल में वहाँ उनकी माँ ने अपनी ज़िंदगी का बड़ा हिस्सा अपने अब्बा के साथ बिताया था इसलिए उस जगह से उन्हें खास मोहब्बत हो गई थी।

इसी तरह क़ादियान में रहने वालों का वतन भी अब यही क़ादियान हो गया है। कोई सच्चा अहमदी ये पसंद नहीं करता कि बिना मजबूरी क़ादियान को छोड़कर कहीं और जाए। हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल (रज़ियल्लाहो अन्हु) कहा करते थे "मुझे क़ादियान

से इतनी मोहब्बत है कि मैं एक दिन के लिए भी क़ादियान छोड़कर बाहर जाने को तैयार नहीं। अगर कोई मुझे रोज़ाना लाख रुपये भी दे कि मैं क़ादियान से बाहर रहूँ, तब भी मैं क़ादियान में रहने को उन पैसों से हज़ार गुना बेहतर समझूँगा।"

इसलिए वतन से मोहब्बत करना इंसानी फ़ितरत की बात है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जहाँ वो कुछ वक़्त बिताता है, वहाँ के लोगों से उसका रिश्ता बन जाता है। एक सच्चा मोमिन जो सबका भाई है उसमें ये मोहब्बत और जल्दी पैदा हो जाती है। तभी तो कहा गया है: "हुब्बुल वतन मिनल ईमान" यानी वतन से मोहब्बत रखना ईमानदारी की निशानी है। (अल-फज़्ल, 9 दिसम्बर 1939, क़ादियान)

★ ★ ★

इंसानियत की हमदर्दी और भाईचारा

"वह धर्म, धर्म ही नहीं है जिसमें आम हमदर्दी की शिक्षा न हो और वह इंसान, इंसान ही नहीं है जिसमें हमदर्दी का भाव न हो। हमारे ख़ुदा ने किसी भी क़ौम में कोई भेदभाव नहीं किया। जैसे-जैसे शक्तियाँ और योग्यताएँ भारत (आर्यवर्त) की प्राचीन क़ौमों को दी गईं, वही सब ताक़तें अरबों, फ़ारसियों, शामी, चीनी, जापानी, यूरोप और अमेरिका की क़ौमों को भी दी गईं। सबके लिए ख़ुदा की ज़मीन बिछौने का काम करती है और सबके लिए उसका सूरज, चाँद और सितारे रोशनी के दीपक बनकर काम कर रहे हैं। इसी तरह हवा, पानी, आग, मिट्टी और अल्लाह की बनाई बाकी चीजें अनाज, फल, दवाइयाँ इन सबसे हर क़ौम लाभ उठा रही है। इसलिए ये रब्बानी गुण हमें यह सबक़ देते हैं कि हम भी अपने भाई इंसानों के साथ भलाई और दया से पेश आएँ और दिल से संकीर्ण न बनें।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 23, पृष्ठ 439)

मल्फ़ूज़ात हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

क़ुरआन साबित होता है कि गवर्नमेंट का आज्ञापालन करना चाहिए!

"उलुल-अम्र से मुराद जिस्मानी तौर पर बादशाह और रूहानी तौर पर इमाम-ए-ज़माना हैं।"(ज़रूरतुल इमाम, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 13, सफ़ा 493)

क़ुरान में हुक्म है: 'अतीउल्लाह व अतीउर्रसूल व उलुल-अम्रि मिन्कुम'। यानी अल्लाह की इताअत करो, रसूल की इताअत करो और तुम में से जो अधिकारी हैं उनकी भी इताअत करो। उलुल-अम्र की इताअत का सीधा हुक्म दिया गया है। अगर कोई कहे कि सरकार 'मिन्कुम' में शामिल नहीं, तो यह उसकी खुली ग़लती है। सरकार अगर शरीअत के मुताबिक़ कोई बात करती है तो वो 'मिन्कुम' में शामिल है। जो हमारी मुख़ालिफ़त नहीं करता, वो हम में ही शामिल है। इशारतन क़ुरान से साबित होता है कि सरकार की इताअत करनी चाहिए।"(तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम), जिल्द 2, सफ़ा 246)

"मैं सच कहता हूं और तजुर्बे से कहता हूं कि अल्लाह तआला ने इस क़ौम को हक़ के लिए एक हिम्मत दी है। इसलिए मैं यहाँ मुसलमानों को नसीहत करता हूं कि उन पर फर्ज़ है कि वो सच्चे दिल से सरकार की इताअत करें। ये अच्छी तरह याद रखो कि जो इंसान अपने एहसान (उपकार) करने वाले का शुक्रगुज़ार नहीं होता, वो ख़ुदा तआला का शुक्र भी नहीं कर सकता।"(लेक्चर लुधियाना, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 20, सफ़ा 272)

"क़ुरान शरीफ में हुक्म है: 'अतीउल्लाह व अतीउर्रसूल व उलुल-अम्रि मिन्कुम'।

यहाँ उलुल-अम्र की इताअत का साफ़ हुक्म मौजूद है। अगर कोई कहे कि 'मिन्कुम' में सरकार शामिल नहीं, तो ये खुली ग़लती है। सरकार जो शरीअत के मुताबिक़ हुक्म देती है, वो उसे 'मिन्कुम' में शामिल करता है। जैसे जो शख़्स हमारी मुख़ालिफ़त नहीं करता, वो हम में ही शामिल है। इशारतन नसीहत के तौर पर क़ुरान करीम से साबित होता है कि सरकार की इताअत करनी चाहिए और उसके हुक्म मानने चाहिएं।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 1, सफ़ा 171, एडिशन 1988)

"अगर हाकिम (राजा) ज़ालिम भी हो, तो उसे बुरा कहने फिरने के बजाय अपनी हालत में इस्लाह करो ख़ुदा या तो उसे बदल देगा या उसे ही नेक कर देगा। जो तकलीफ़ आती है, वो हमारी ही बुराइयों की वजह से आती है। वरना मोमिन के साथ तो ख़ुदा का सितारा होता है मोमिन के लिए ख़ुदा तआला ख़ुद रास्ते बना देता है। मेरी नसीहत यही है कि हर तरह से तुम नेकियों की मिसाल बनो। ख़ुदा के हक़ भी न छीनो और बंदों के हक़ भी न दबाओ।" (अल-हकम, 24 मई 1901)

★ ★ ★

अल्लाह के गुणों का अनुकरण ज़रूरी है

"मित्रों! यक़ीन मानो कि अगर हम में से कोई क़ौम अल्लाह के गुणों का सम्मान नहीं करेगी और उसके पवित्र उसूलों के ख़िलाफ़ चलन अपनाएगी तो वह क़ौम जल्दी ही तबाह हो जाएगी और न सिर्फ़ ख़ुद को बल्कि अपनी आने वाली पीढ़ियों को भी बर्बादी में डाल देगी। जब से दुनिया बनी है, हर मुल्क के नेक लोग यह गवाही देते आए हैं कि ख़ुदा के गुणों की पैरवी करना इंसान के लिए अमृत जल है। इंसान की शारीरिक और आत्मिक सलामती इसी पर निर्भर है कि वह अल्लाह के सारे पवित्र गुणों को अपनाए, जो सुरक्षा और भलाई के स्रोत हैं।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 23, पृष्ठ 440)

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमूदात

"हर मुल्क का अहमदी यह ख्वाहिश रखता है कि उसका वतन दुनिया में बेहतरीन पहचान बनाए।"

किसी देश का नागरिक होने के नाते हम अपने देश से वफ़ादारी और मोहब्बत रखते हैं। हर मुल्क का अहमदी चाहता है कि उसका देश दुनिया में खूब नाम बनाए। इसके लिए वह मेहनत भी करता है, दुआ भी करता है और करनी भी चाहिए। एक अहमदी अपनी व्यक्तिगत हैसियत से किसी भी देश की सियासत में या किसी राजनीतिक पार्टी के साथ जुड़कर भी हिस्सा ले सकता है। दुनिया के कई देशों में अहमदी हुकूमत की पार्टी में शामिल होकर मुल्क की तरक्क़ी में योगदान दे रहे हैं और कई जगह हुकूमत की मुख़ालिफ़ (विपक्ष) पार्टी में रहकर भी देश की तामीर और भलाई में हिस्सा डाल रहे हैं।

इसलिए एक अहमदी को अपने वतन के नागरिक होने के नाते मुल्क के सियासी मामलों में दिलचस्पी लेना चाहिए लेकिन जमात-ए-अहमदिया को बतौर जमात या ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया को किसी हुकूमत या किसी मुल्क की सरकार पर क़ब्ज़ा करने से कोई दिलचस्पी नहीं है और न ही ये हमारा मक़सद है। हमें हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के सच्चे आशिक़ ने जो रास्ता दिखाया है, वो दुनिया की हुकूमतें लेने के लिए नहीं बल्कि रूहानी बादशाहत और अल्लाह तआला की रज़ा (ख़ुशी) हासिल करने के लिए है।

हाँ, जब भी किसी भी हुकूमत को मुल्क की तरक्क़ी और सलामती के लिए मशवरे या कुर्बानियों की ज़रूरत हुई, तो जमात-ए-अहमदिया ने हिस्सा लिया है और आगे भी लेती रहेगी।

हमारी बेचैनी किसी हुकूमत के लिए नहीं, हमारी बेचैनी वतन की सलामती के लिए है, हमारी बेचैनी मुल्क के लोगों के लिए है। हम ये कोशिश करते हैं और अपनी हद तक दुनिया में जहां-जहां मुमकिन हो, मुल्क को मुश्किल से निकालने की भरपूर कोशिश करते हैं।

ये सब कुछ हमें उस तालीम ने सिखाया है जो हमें हमारे आका और मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने दी है। हम उस उस्वा (आदर्श) पर चलने की कोशिश करते हैं जो आपने हमारे सामने पेश किया और ख़ुदा तआला ने हमें हिदायत दी कि यही मेरा प्यारा रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) है, जिसके उस्वा (आदर्श) पर चलना तुम्हारे लिए फ़र्ज़ कर दिया गया है। और वह उस्वा यह है कि अपने दुख भूलकर इंसानियत की सेवा करो।"

(ख़ुत्बा जुमा 8 अक्टूबर 2010)

★ ★ ★

एक महत्वपूर्ण वचन

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलखामिस (अय्यदहुल्लाहु तआला) फ़रमाते हैं:

"फिर एक और बहुत अहम वचन है, जिस पर मैं ध्यान दिलाना चाहता हूँ। यह वह वचन है, जो हर देश का नागरिक ख़ुदा को गवाह बनाकर या क़ुरान को गवाह बनाकर अपने वतन से करता है या कई बार सिर्फ़ देश के राजा या राष्ट्रपति के नाम पर भी यह क़सम खाता है। यह ऐसा वादा है जिसे निभाना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है। और जो इसे पूरा नहीं करता, उसका ईमान कमज़ोर माना जाता है। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया है कि वतन से मोहब्बत ईमान का हिस्सा है। अहमदियों को इसकी बारीकियों को भी समझना और उस पर अमल करना चाहिए।" (ख़ुत्बा जुमा 9 अगस्त 2013)